EDUZONE: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal (EIPRMJ), ISSN: 2319-5045
Volume 12, Issue 2, July-December, 2023, Available online at: www.eduzonejournal.com

मंजुल भगत के कथा साहित्य में स्त्री एक अध्ययन

प्रियंका

जे.आर.एफ.
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यलय

परिचय

चर्चित महिला कथाकारों में मंजुल भगत का नाम बड़े आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है। इनका जन्म 22 जून 1936 को मेरठ में हुआ था। इन्होंने दर्जनों कहानियां और उपन्यास लिखे।मंजूलजी ने अपनी कहानियों और उपन्यासों में स्त्री जीवन की विसंगतियों का सशक्त चित्रण किया है।इन्होंने स्त्री की विसंगतिपूर्ण जीवन के प्रत्येक पक्ष पर, चाहे वह पारिवारिक यथार्थ हो अथवा सामाजिक यथार्थ पर अपनी लेखनी चलाई। स्त्री से जुड़ी सामाजिक विषमता,पति–पत्नी संबंध और प्रेम के विविध पक्षों का उद्घाटन मुंजल भगत के कथा साहित्य में मिलता है।मुंजलजी ने अपने कथा साहित्य में ग्रामीण नारी,शहरी नारी, शिक्षित नारी औरअशिक्षित नारी, निम्नवर्ग, मध्यवर्ग, उच्चवर्ग और कामकाजी, बुर्जुग, भिखारिणी आदि प्रत्येकस्त्री–पात्रों को अपने कथा साहित्य में स्थान दिया है।

मंजुल भगत के कथा साहित्य में स्त्री पात्र विविध प्रकार हैं। ये स्त्री पात्र कभी जीवन में परंपरावादी रूप में त्याग और समर्पण की मूर्ति बनकर उजागर होते हैं तो कभी आधुनिक रूप में स्वच्छंद शैली अपनाते हैं। कभी परंपराओं और रूढ़ियों से टक्कर लेते हैं तो कभी आत्मनिर्भर बनकर परिस्थितियों से जूझते हैं। कुछ स्त्री पात्र तो अपने जीवन में संघर्ष नहीं कर पाते वे अनेक समस्याओं से ग्रस्त रहते हैं तथा परिवार में उपेक्षा का शिकार भी होते हैं तथा अपने के ही बीच निरर्थक जीवन जीते हैं। मंजुल भगत ने भी अनेक मुश्किलों, परेशानियों और विपरीत स्थितियों में अपना जीवन जीया, कभी हार नहीं मानी। शायद यही कारण है कि उनके कथा साहित्य में स्त्री पात्र कभी भी पराजित नहीं होते हैं अपितु जीवनभर संघर्ष करते हैं। मृदुला गर्ग ने इस संदर्भ में लिखा है कि "उन्होंने अपना एक स्त्री–विमर्श विकसित किया था। इसमें पश्चिम से स्त्रीवादी आंदोलन का प्रत्यक्ष रूप से कोई प्रभाव नहीं था। मजुंल ने अपनी स्त्री को भारतीय ही बनाकर रखा था। वे भारतीय स्त्री की प्रतिरूप थी और उनके पात्र भी अपने गुणों के साथ भारतीय ही हैं। मंजुल ने इस भारतीयता में से ही अपनी नई स्त्री को खोजा और अपने साहित्य में स्थान दिया।"

वस्तुतः इनकी स्त्री भारतीय संस्कारों से ओतप्रोत है। प्राचीन भारतीय प्रधान समाज में स्त्री आदर्श पत्नी के रूप में पति की अर्धांगिनी, हर दुःख सुख में साथ रहने वाली सती सावित्री जैसी रूपों की परिकल्पना की गई है, परंतु स्वतंत्रता के बाद भी यही स्थिति ज्यों की त्यों बनी हुई है। एक भारतीय पत्नी का समर्पण और त्यागमयी प्रारंभिक रूप यहां तक मिलता है कि उसका पति चाहे कितना भी दुराचारी क्यों न हो फिर भी वह उसकी दीर्घायु और उसके स्वस्थ जीवन की मंगल कामना करती हुई व्रत रखती है।

मंजुल भगत की 'शादी की सालगिरह' कहानी की नायिका कादंबरी पूर्ण रूप से अपने पति शशांक के लिए समर्पित है तथा भारतीय परंपरा से चली आ रही त्यागऔर समर्पित नारी का प्रतिनिधित्व करती है। शिक्षित और आधुनिक स्त्री होते हुए भी त्याग की मूर्ति बनकर अपनी पढ़ाई बीच में छोड़ देती है, ताकि उसका प्रेम उसके प्रेमी शशांक की पढ़ाई में बाधा उत्पन्न न कर सके। मंजुल भगत की कहानी 'नालायक बहू' कामिनी अपने पति के साथ–साथ पूरे परिवार की आदर्श बहू साबित होती है। कामिनी का पति बेरोजगार है। कमीनी का सास कामिनी पर ताने मारती रहती है। लेकिन वह कादंबरी के समान अतीत की यादों में खोई नहीं रहती अपितु अपने को परिस्थितियों के अनुसार डाल लेती है। वह स्वयं पति व परिवार पर बोझ नहीं बनती बल्कि आर्थिक संकट आने पर खुद घर खर्च खुद चलाती है और पति को भी रोजगार करने में जुगाड़ करती है। इस प्रकार कामिनी एकऐसी जीवंत पात्र है कि विषम परिस्थितियों में भी हार नहीं मानती। वह अपनी सूझबूझ से पति की असमर्थता व बेरोजगारी से उत्पन्न कुंठाओं के अंधेरे से खींचकर उसमें आत्मविश्वास का संचार करती है।

मंजुल भगत केकथा साहित्य में भारतीय नारी के साथ–साथ विदेशी स्त्रियां भी भारतीयता के रंग में रंगकर स्वयं को आदर्श पत्नी साबित करती हैं। वे अपने पति के हर कदम पर साथ रहती हैं।'अंतिम चोट' कहानी की नायिका 'सिगरिड' मूल रूप से विदेशी पात्र है। जिसका प्रेम–विवाह भारतीय मूल के देवेश सक्सेना से होता है। विदेशी स्त्री होते हुए भी सिगरिड अपने आपको एक आदर्श भारतीय नारी के सांचे में ढ़ालने का प्रयत्न करती है तथा यहां के संस्कारों को अपनाती है तथा यहां के रीति–रिवाजों में भी अपनी आस्था रखती है।

आज बदलते हुए समाज में स्त्री पति की सहभागिनी बनकर प्रगति के हर क्षेत्र में पति के कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा होना चाहती है तथा पति के लिए घर की चारदीवारी लांघकर संघर्ष भी करती है। इस नई सोच और आधुनिकता ने स्त्री जीवन को नई दिशा दी है। इस नई चेतना के विकास के कारण स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन आया है। वे न केवल आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही हैं अपितु अपनी पहचान के लिए भी संघर्ष करने लगी हैं।

रमणिका गुप्ता ने भी स्त्री के संबंध अपने लेख 'पुरुष सौंदर्य की कसौटी पर खुद को तोलती औरत' में उचित ही लिखा है–"मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के अनुसार, दूसरे को आकर्षित करने के लिए ही सुंदर क्यों लगना, मनुष्य मात्र के लिए क्यों नहीं। सुंदर लगना मनुष्य की कलात्मक प्रवृत्ति का द्योतक है। इसलिए स्त्री सुंदरबनकर रहे अपनी ऐस्थेटिक सेंस के तहत, न की पुरुष के लिए।

मंजुल की कहानी 'तीसरी औरत' की नायिका 'ताशा'एक मध्यवर्गीय स्त्री है। ताशा गौरव नामक एक विवाहित पुरुष से प्रेम करती है। वह उसके सिवाय किसी अन्य पुरुष के बारे में न तो सोचती है और वह समाज की परवाह न करते हुए अपना कहीं भी विवाह नहीं करती लेकिन ताशा को अपने प्रेमी से बिछड़ने का भय सदा सताता रहता है। क्योंकि वह जानती है कि उसका प्रेमी विवाहित है। ताशा अपने प्रेम के लिए अपने जीवन का एक लंबा समय गंवा देती है और अंत में उसका प्रेमी गौरव किसी 'तीसरी औरत' के लिए ताशा को छोड़कर चला जाता है। परंतु इस विषम परिस्थितियों में भी ताशा टूटती नहीं है, अपितु स्वयं को और भी मुक्त और स्पूर्ति भरा अनुभव करने लगती है। ताशा को लगता है कि जैसे ही संबंध के समाप्त होते ही उसका खोया हुआ आत्मविश्वास, उत्साह पुनः लौट आया है। लेखिका के शब्दों में "मृत्यु–साअंतिमवह मिलन। अचानक उसे लगा उसके वजूद के पांचों खंड एक साथ उठ खड़े हुए हैं। एक संपूर्ण राजसी इकाई,आत्मनिर्भरता और परिपूर्णता से ओतप्रोत। उसने अपने आपको पा लिया है। इसकी अपनी क्षमताओं और संभावनाओं का समस्त संसार सामने है। यह अंत तो केवल उसके और गौरव के मिलन का था, उसका नहीं, जीवन का नहीं।

घनश्याम भूतड़ा ने भी कहा है– एक समय था जब विवाह धार्मिक पवित्र बंधन समझा जाता था। नारी भगवान भरोसे पति के अत्याचार सहकर पति परायण बनी रहती थी। आधुनिक नारी अपने अधिकारों के प्रति सचेत है। वह कानूनी तरीके से अधिक सुरक्षित तथा आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र है। नारी की इस स्वतंत्र प्रियता ने परंपरागत विवाह संस्था के सामने प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। वस्तुतः ताशा आत्मनिर्भर है। अतः वह अपने जीवन को अपने ढंग से जीती है।

सारांश रूप में कहा जा सकता है कि मंजुल भगत के नारी पात्र वैविध्यपूर्ण है। उनमें परंपरावादी, आधुनिक, आत्मनिर्भर व समस्याग्रस्त पात्रों के अतिरिक्त शहरी, ग्रामीण, शिक्षित, अशिक्षित सभी तरह के नारी पात्र हैं। मंजुल की विशेषता यह है कि वह अपने नारी पात्रों को अपने परिवेश में से खोजती है तथा नारी पात्रों की विशेषता यह है कि ये पत्र किसी भी प्रकार के अपराध बोध और कुंठा से मुक्त है। नारी के साथ अपराध बोध का जो मिथक बना हुआ था, वह इन नारी पात्रों से नहीं मिलता है। नारी की यह मुक्ति मंजुल भगत के लेखन की एक सबसे बड़ी उपलब्धि है। समाज के वर्तमान परिवेश यथार्थ को चित्रित करने में पूरी तरह सक्षम एवं संवेदनशील है और रचनाकार की सबसे बड़ी उपलब्धि में शामिल है कि उसके पात्र समाज को आईना दिखाने लगते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. मंजुल भगत, शादी की सालगिरह, पृष्ठ 85
2. मंजुल भगत, नालायक बहू, पृष्ठ 31
3. मंजुल भगत, अंतिम चोट, पृष्ठ 93
4. रमणिका गुप्ता, स्त्री मुक्ति : संघर्ष और इतिहास,पृष्ठ 37
5. मंजुल भगत, तीसरी औरत, पृष्ठ 26
6. मंजुल भगत, तीसरी औरत, पृष्ठ 36
7. घनश्याम भूतड़ा, समकालीन हिंदी कहानी में नारी के विविध रूप, पृष्ठ 73